13

जीवन के महत्वपूर्ण कौशल और बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान

एक विश्लेषणात्मक दृष्टि

उषा शर्मा*

शिक्षा न केवल एक मानव अधिकार है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता भी है। जीवन में ऐसे अनेक संदर्भ उपस्थित रहते हैं, जहाँ पढ़ने-लिखने और संख्या-ज्ञान संबंधी कुशलताओं का प्रयोग किया जाता है। फिर चाहे वह दुकान से राशन खरीदना हो या बैंक में पैसा जमा करना हो या बैंक से निकालना हो या फिर आमदनी का हिसाब-किताब रखना हो। ऐसे और भी संदर्भ हैं जहाँ असाक्षर व्यक्ति स्वयं को दूसरों पर निर्भर पाता है और एक तरह का संकोच, हीन भावना और स्वयं को पूर्णतया अक्षम समझने से ग्रसित रहता है। ऐसे असाक्षर व्यक्तियों को साक्षर बनाने के लिए भारत सरकार द्वारा एक केंद्र प्रायोजित योजना का प्रारंभ किया गया जिसका नाम है— नव भारत साक्षरता कार्यक्रम। यह कार्यक्रम 'उल्लास' (ULLAS) नाम से लोकप्रिय है। उल्लास का पूरा अर्थ है— अंडरस्टैंडिंग ऑफ लाइफलॉन्ग लर्निंग फॉर ऑल इन सोसाइटी अर्थात समाज में सभी के लिए जीवनपर्यंत सीखने की समझ। इस योजना का उद्देश्य है— 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के उन सभी स्त्री-पुरुष, किशोर-किशोरियों को साक्षर बनाना जो किन्हीं कारणों से पढ़ना-लिखना और गणित नहीं सीख पाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अध्याय 21 इसी 'प्रौढ़ शिक्षा और जीवनपर्यंत सीखना' (जिसे अब 'सभी के लिए शिक्षा' कहा गया है।) को समर्पित है और 2030 तक पूर्ण साक्षर भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने की अनुशंसा करती है। यह नीति शिक्षा को मौलिक अधिकार के रूप में देखते हुए स्पष्ट रूप से उल्लेख करती है कि 'बुनियादी साक्षरता प्राप्त करना, शिक्षा प्राप्त करना और जीविकोपार्जन का अवसर प्रत्येक नागरिक का मौलिक अधिकार है। साक्षरता और बुनियादी शिक्षा किसी व्यक्ति के वैयक्तिक, नागरिक, आर्थिक और जीवनपर्यंत शिक्षा के अवसरों की एक नवीन दुनिया खोल देती है जो व्यक्ति को निजी और पेशेवराना, दोनों ही स्तरों पर आगे बढ़ने में मदद करती है'। इस अर्थ में शिक्षा व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में उन्नति के लिए एक नितांत आवश्यक उपादान के रूप में दृष्टिगत होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 'सभी के लिए शिक्षा' के संदर्भ में मुख्य रूप से पाँच घटकों का उल्लेख करती है— 1) बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान; 2) महत्वपूर्ण जीवन कौशल; 3) व्यावसायिक कौशल विकास; 4) बुनियादी शिक्षा एवं

**प्रभारी*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 110 016

5) सतत शिक्षा। इन पाँचों घटकों का अपना एक विशिष्ट महत्व है और आवश्यकता भी, क्योंकि बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान (एफ.एल.एन.) घटक व्यक्ति को पढ़ना-लिखना और गणित सीखने में सहायता करेगा तो इसी साक्षरता के सहारे व्यक्ति अपनी आजीविका के लिए भी प्रयास करेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के दिशानिर्देश जीवन के महत्वपूर्ण जीवन कौशलों के माध्यम से बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान सीखने-सिखाने की बात करते हैं। डिजिटल साक्षरता, वित्तीय साक्षरता, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, कानूनी साक्षरता, पर्यावरण संबंधी साक्षरता आदि ऐसे महत्वपूर्ण जीवन कौशल हैं जो पढ़ना-लिखना सीखने के विषय के रूप में कार्य करते हैं। यह लेख जीवन के महत्वपूर्ण जीवन कौशलों के माध्यम से बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान सीखने-सिखाने की शिक्षाण शास्त्रीय प्रक्रिया की पड़ताल करता है। ऐसे कौन-से बिंदु हैं जिन पर असाक्षर विद्यार्थी के साथ परस्पर संवाद आवश्यक है? संवाद की यह प्रक्रिया किस प्रकार से जानकारी भी देती है और पढ़ना-लिखना सीखने को सहज भी बनाती है? जीवन के महत्वपूर्ण जीवन कौशल से संबंधित सामग्री का क्या स्वरूप है? आदि।

प्रस्तावना

जिस राष्ट्र की शिक्षा नीति, शिक्षा के लक्ष्य के रूप में 'अच्छे इंसानों का विकास करना' जैसे विचार को सर्वोपरि मानती है उस राष्ट्र का शिक्षा संबंधी वितान अपेक्षाकृत विस्तृत होता है। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी इसी वितानपरक शिक्षायी ढाँचे का समर्थन करती है। वह शिक्षा के माध्यम से न केवल तर्कसंगत विचार और कार्य करने को पोषित करती है, बल्कि करुणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन और रचनात्मक कल्पनाशक्ति, नैतिक मूल्य को भी महत्व देती है (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पृष्ठ 6)। शिक्षा ऐसी हो जो व्यक्ति को अपने पैरों पर खड़ा होने या आत्मनिर्भर बनने में सहायता करे, जो रोजगारपरक हो और साथ ही जो बहुलतावादी समाज के लिए उपयोगी हो। समाज और शिक्षा के मध्य एक ऐसा संबंध होता है कि दोनों न केवल एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं, बल्कि एक-दूसरे से प्रभावित होते भी हैं। सतत विकास एजेंडा 2030 का लक्ष्य 4— विश्व में 'सभी के लिए समवेशी और समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवनपर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा देना है (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020; पृष्ठ 3)। यदि सतत विकास एजेंडा 2030 के लक्ष्य 4 को गहन दृष्टि से देखा जाए, तो तीन बिंदु अपनी ओर ध्यान आकर्षित करते हैं— 1) सभी के लिए शिक्षा; 2) समवेशी और समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा; और 3) जीवनपर्यंत शिक्षा के अवसर। ये तीनों ही बिंदु शिक्षा को उसकी समग्रता में प्रस्तुत करते हैं। सतत विकास एजेंडा 2030 का 4.6 लक्ष्य 2030 तक सभी युवाओं और वयस्क, जिसमें महिलाएँ और पुरुष दोनों शामिल हैं— उनकी साक्षरता तथा संख्या-ज्ञान को सुनिश्चित करने पर बल देता है (गाइडलाइंस ऑफ न्यू इंडिया लिटेरसी प्रोग्राम्स, पृष्ठ 9)। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी इन्हीं तीनों बिंदुओं का समर्थन

करते हुए सभी के लिए शिक्षा संबंधी अनेक अनुशंसाएँ करती है। राष्ट्र की साक्षरता दर और जी.डी.पी. के मध्य उच्चतर सहसंबंध होता है, इसलिए भी देश के नागरिकों का साक्षर होना आवश्यक है। इतना ही नहीं, असाक्षर व्यक्ति दैनिक जीवन की अनेक प्रकार की समस्याओं का भी सामना करता है। साक्षर होना केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए ही कार्य नहीं करता अपितु यह अपने बच्चों की शिक्षा में भी सहायक होता है। अत: साक्षरता एक व्यापक अवधारणा है जो केवल अक्षर-ज्ञान या संख्या-ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि विभिन्न संदर्भों में साक्षरता का उपयोग करने की क्षमता है। इस साक्षरता का स्वरूप गत्यात्मक और प्रकार्यात्मक है जो जीवन को गरिमामय और उत्कृष्ट बनाता है।

सतत विकास एजेंडा 2030 के लक्ष्य 4.6 को प्राप्त करने हेतु वैश्विक स्तर पर अनेक प्रयास किए गए जिसमें से सबसे महत्वपूर्ण है— साक्षरता के लिए वैश्विक गठबंधन। साक्षरता संबंधी मूल अवधारणा यह है कि "साक्षरता शिक्षा के अधिकार का एक अभिन्न अंग है और आजीवन सीखने की नींव है। फिर भी पूरे विश्व में लगभग 773 युवा और वयस्क अभी भी बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान प्राप्त नहीं कर सके हैं। इनमें महिलाएँ भी शामिल हैं। असाक्षर युवा और वयस्क पढ़ने-लिखने और गणित का काम न कर पाने के कारण अपनी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग नहीं कर पाते हैं। इससे उनके रोजगार और नौकरी पर भी बुरा असर पड़ता है। उनके लिए विकास और प्रगति के अवसर सीमित हो जाते हैं और साथ ही दैनिक जीवन से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियों, जैसे— स्वास्थ्य, पर्यावरण, राजनीति, अर्थव्यवस्था आदि से वंचित हो जाते हैं" (यूनेस्को, 2021, पृष्ठ 7)। इस प्रकार साक्षरता एक वैश्विक सरोकार भी है जिसके लिए सतत प्रयास जारी हैं।

उल्लास— नव-भारत साक्षरता कार्यक्रम

15 वर्ष और उससे अधिक आयु के वे व्यक्ति जो किन्हीं कारणों से स्कूली शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके या पढ़ना-लिखना और गणित नहीं सीख सके, उनके लिए भारत सरकार द्वारा उल्लास कार्यक्रम है वर्ष 2022–27 तक की अवधि के लिए भारत सरकार की एक केंद्र प्रायोजित योजना का शुभारंभ किया गया, जिसका नाम है— नव भारत साक्षरता कार्यक्रम और इसका आदर्श वाक्य है— *जन-जन साक्षर*। जैसा कि स्पष्ट किया गया है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप इस योजना में मुख्य पाँच घटक हैं— 1) बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान; 2) महत्वपूर्ण जीवन कौशल (जैसे— वित्तीय साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, व्यावसायिक कौशल, स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता, शिशु पालन एवं शिक्षा और परिवार कल्याण); 3) व्यावसायिक कौशल विकास (स्थानीय रोजगार प्राप्ति के मद्देनजर); 4) बुनियादी शिक्षा (प्रारंभिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के समकक्ष) एवं 5) सतत शिक्षा (जैसे— कला, विज्ञान, तकनीकी, संस्कृति, खेल, मनोरंजन, आदि के अलावा स्थानीय शिक्षार्थियों की रुचि अथवा लाभ की दृष्टि से अन्य विषयों, उदाहरण के लिए— महत्वपूर्ण जीवन कौशलों पर अधिक उन्नत सामग्री, पर प्रौढ़ कोर्स (राष्ट्रीय शिक्षा

नीति 2020, पृष्ठ 84)। देश के असाक्षर व्यक्तियों को साक्षर बनाने का दायित्व मुख्य रूप से कक्षा 5 अथवा उससे ऊपर की कक्षाओं के पढ़ने वाले स्कूली बच्चे हैं। स्वयंसेवी शिक्षकों के रूप में कार्य करने वाले अन्य विद्यार्थी उच्च शिक्षा के अंतर्गत विश्वविद्यालय एवं कॉलेज तथा शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम के प्रशिक्षु (टीचर ट्रेनीज) उच्च शिक्षा से संबंधित हैं। साथ ही एन.सी.सी., एन.एस.एस., नेहरू युवा केंद्र के विद्यार्थी, समुदाय के सदस्य आदि स्वयं सेवी शिक्षक की भूमिका का निर्वहन करेंगे। नव भारत साक्षरता कार्यक्रम के दिशानिर्देशों में योजना से संबंधित कुछ मुख्य बिंदु इस प्रकार से हैं—

- महत्वपूर्ण जीवन कौशलों के माध्यम से 15 वर्ष अथवा उससे अधिक आयु वर्ग के असाक्षर व्यक्तियों को बुनियादी साक्षरता (पढ़ना एवं लिखना) एवं संख्या-ज्ञान (गणित) प्रदान करना।
- इस योजना का लक्ष्य प्रति वर्ष 1 करोड़ असाक्षरों को साक्षर बनाना है।
- यह योजना सभी शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में क्रियान्वित की जा रही है और इसमें सभी जिले, जिला पंचायतें, ब्लॉक, ग्राम पंचायत, गाँव आदि सम्मिलित हैं।
- प्राथमिकता सूची में सम्मिलित हैं— बालिकाएँ और स्त्रियाँ, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अल्पसंख्यक/अन्य पिछड़ा वर्ग, विशेष आवश्यकता वाले व्यक्ति/दिव्यांगजन, हाशिए पर रहने वाले/घुमंतू/कंस्ट्रक्शन साइट पर काम करने वाले कर्मचारी/मजदूर आदि।
- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या-ज्ञान, जिसमें सम्मिलित हैं— पढ़ना, लिखना और गणित जो व्यावहारिक है और जीवन में उपयोगी भी है। यह कार्य महवपूर्ण जीवन कौशलों के माध्यम से ही पूर्ण किया जाएगा।
- महत्वपूर्ण जीवन कौशल, जिसमें सम्मिलित हैं— वित्तीय साक्षरता, कानूनी साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, पर्यावरण संबंधी साक्षरता, आपदा प्रबंधन, व्यावसायिक कौशल, बच्चों की देखभाल और शिक्षा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण से संबंधित मुद्दे, प्राथमिक चिकित्सा, यातायात के नियम, विभिन्न प्रकार के फॉर्म भरना, जैसे— मतदाता के रूप में पंजीकरण, आधार कार्ड बनवाना आदि।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा हिंदी में ऑनलाइन मॉड्यूल (वीडियो कार्यक्रम) बनाना और उन्हें राज्यों की स्थानीय भाषाओं में यथा आवश्यक संशोधन के साथ अंतिम रूप से निर्धारित करना।
- यह योजना स्वयंसेवी शिक्षकों के माध्यम से क्रियान्वित की जा रही है, जिसमें दो प्रकार के स्वयंसेवी हैं— 1) स्वयंसेवी शिक्षक जो असाक्षरों को साक्षर बनाने में अपनी सेवाएँ प्रदान करेंगे। ये कक्षा 8 अथवा उससे उच्च स्तर की शैक्षिक योग्यता रखने वाले वे व्यक्ति हैं जो मोबाइल फोन/कंप्यूटर चलाने की कुशलता रखते हैं। 2) साक्षरता कार्यकर्ता जो स्वैच्छिक रूप से इस योजना को क्रियान्वित करने में अपना योगदान देंगे। ये साक्षरता कार्यकर्ता विद्यालय,

ग्राम पंचायत, वार्ड, ब्लॉक, बस्ती या जिला स्तर पर अपनी सेवाएँ देंगे। राज्य एवं संघ शासित प्रदेशों का प्रशासन इन साक्षरता कार्यकर्ताओं को इस योजना में स्वैच्छिक सेवाओं के लिए सम्मिलित कर सकते हैं—

- राज्य/संघ शासित प्रदेशों द्वारा चिह्नित/प्रतिनियुक्त सर्वेक्षणकर्ताओं द्वारा असाक्षर शिक्षार्थियों और स्वयंसेवी शिक्षकों की पहचान करना।
- असाक्षर शिक्षार्थी स्वयं भी उल्लास मोबाइल ऐप पर अपना पंजीकरण कर सकते हैं।
- राज्य/संघ शासित प्रदेशों के मुख्य साधन सेवियों के लिए उन्मुखी एवं क्षमता संवर्धन कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एन.आई.ओ.एस.) द्वारा अ-साक्षर विद्यार्थियों के लिए बुनियादी साक्षरता एवं संख्या-ज्ञान आकलन परीक्षा (एफ.एल.एन.ए.टी.) का आयोजन करना एवं उत्तीर्ण नव-साक्षर शिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र प्रदान करना।

यह स्पष्ट है कि उल्लास की पूरी योजना में स्वयंसेवी शिक्षकों की एक महत्वपूर्ण भूमिका है और इस योजना के प्रचार-प्रसार के लिए सरकारी एवं निजी दोनों प्रकार के तंत्र सदैव तत्पर रहते हैं।

साक्षरता की परिभाषा

साक्षर होने का क्या अर्थ है? साक्षर व्यक्ति भाषा और गणित की किन बुनियादी दक्षताओं में कुशल होता है? क्या केवल अपने हस्ताक्षर कर लेना ही पर्याप्त है अथवा कोई अन्य कुशलता भी अनिवार्य है? क्या केवल नाकों की पहचान कर लेना पर्याप्त है अथवा गणित की संक्रियाओं में कुशल होना आवश्यक है? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जो प्राय: साक्षर होने के संदर्भ में जिज्ञासावश पूछे जाते हैं। जैसा कि स्पष्ट है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सबके लिए शिक्षा (पूर्व में प्रौढ़ शिक्षा) के संदर्भ में मुख्य रूप से 5 घटकों का उल्लेख करती है। इनमें से दो घटक साक्षरता की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं— 1) बुनियादी साक्षरता एवं संख्या-ज्ञान; 2) महत्वपूर्ण जीवन कौशल। नव भारत साक्षरता कार्यक्रम के दिशानिर्देशों में भी यह बिंदु स्पष्ट रूप से आया है कि साक्षरता को महत्वपूर्ण जीवन कौशलों के माध्यम से प्राप्त किया जाए। चूँकि नव साक्षर होने के बाद अपनी शिक्षा को जारी रखने के लिए राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के माध्यम से ओपन बेसिक एजुकेशन (ओ.बी.ई. प्रोग्राम) की दिशा में अग्रसर हो सकता है। यह ओपन बेसिक एजुकेशन तीन स्तरों पर शिक्षा का प्रावधान करती है— स्तर अ (कक्षा 3 के समकक्ष), स्तर ब (कक्षा 5 के समकक्ष) और स्तर स (कक्षा 8 के समकक्ष)। नव साक्षर व्यक्ति वह है जो, बुनियादी साक्षरता एवं संख्या-ज्ञान के सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त कर लेता है और नव साक्षर व्यक्ति राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान द्वारा उपलब्ध कराई गई स्तर अ (कक्षा 3 के समकक्ष) की शिक्षा प्राप्त कर सकता है जो कक्षा 3 के समकक्ष है। इस प्रकार बुनियादी साक्षरता एवं संख्या-ज्ञान के माध्यम से व्यक्ति इतना पढ़ना-लिखना और गणित सीख ले कि वह अपनी क्षमताओं के अनुसार स्तर अ अथवा

स्तर ब/स की शिक्षा में सम्मिलित हो सके। यह इस बात का द्योतक है कि कम से कम कक्षा 3 से पूर्व की दक्षताओं में उल्लास शिक्षार्थियों को कुशल होना होगा जो केवल हस्ताक्षर करने, अपना नाम और पता लिखने से अधिक उच्च स्तर की दक्षता है। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा गहन विचार-विमर्श के उपरांत भारत ने अपने साक्षरता कार्यक्रम के लिए एक ऐसी परिभाषा गढ़ी जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप थी—

"साक्षरता समझ के साथ पढ़ने, लिखने और गणना करने की क्षमता है, जैसे कि पहचान करना, समझना, व्याख्या करना और सृजन करना। इसमें डिजिटल साक्षरता, वित्तीय साक्षरता आदि जैसे महत्वपूर्ण जीवन कौशल भी सम्मिलित हैं।"
(स्त्रोत— https://ncert.nic.in/cncl/resources/pdf/DO%20Letter%20Regarding%20Definition%20of%20Literacy.pdf)

साक्षरता की इस परिभाषा में यह स्पष्ट है कि साक्षर होने के लिए महत्वपूर्ण जीवन कौशलों में कुशल होना आवश्यक है। पढ़ना सीखने की प्रक्रिया में स्वयं अर्थ का निर्माण भी करना होगा और लिखने की प्रक्रिया में दैनिक जीवन में लेखन की आवश्यकताओं को पूर्ण करने योग्य होना होगा। दैनिक जीवन में उपयोगी गणितीय संक्रियाओं को समझकर उपयोग में लाना होगा।

नॉर्वे के रिफ्यूजी काउंसिल यूथ प्रोग्राम के अंतर्गत 15–32 वर्ष के व्यक्तियों के लिए एक ऐसा साक्षरता कार्यक्रम बनाया गया है जिसमें बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान के साथ-साथ तकनीकी कौशल, संप्रेषण के कौशल और सामाजिक-संवेगात्मक कौशल भी सिखाने के प्रयास किए गए। उनके पाठ्यक्रम में बुनियादी साक्षरता के अंतर्गत नॉर्वे की भाषाएँ सिखाने का प्रावधान किया गया, वहीं तकनीकी कौशल के अंतर्गत सिलाई, बढ़ई का काम, वैल्डिंग का काम, गहने बनाने का काम, ए.सी. और मोबाइल की मरम्मत का काम सिखाने की व्यवस्था की गई। इन्हीं कौशलों के साथ जीवन कौशल भी समेकित किए गए और पाठ्यक्रम को एक समग्र रूप प्रदान किया गया (जोलडोशालिवा; रखत एवं अन्य, 2022, पृष्ठ 179)। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि पढ़ने-लिखने और संख्या-ज्ञान के साथ जीवन कौशल भी अर्जित करने होंगे, ताकि आर्थिक रूप से सुरक्षित हुआ जा सके।

उल्लास— गुणवत्तापूर्ण संसाधन सामग्री

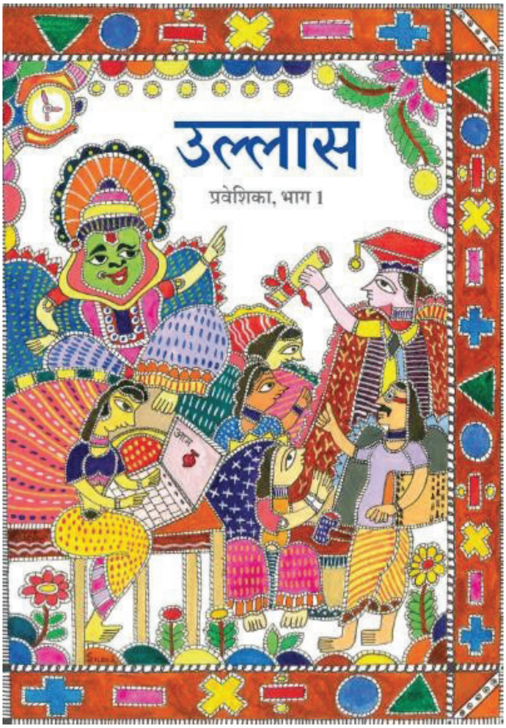

'उल्लास' कार्यक्रम के अंतर्गत बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान (एफ.एल.एन.) के अधिगम को केंद्र में रखते हुए 15 वर्ष अथवा उससे ऊपर की आयु-वर्ग के लिए विभिन्न प्रकार की संसाधन सामग्री का निर्माण किया गया है जो 22 भाषाओं से भी अधिक भाषाओं में उपलब्ध है। असाक्षर शिक्षार्थियों के लिए विशेष रूप से चार भागों में 'उल्लास' प्रवेशिका और 'उल्लास' प्रवेशिका का संक्षिप्त संस्करण भी विकसित किया गया है। साथ ही इन प्रवेशिकाओं के माध्यम से सीखने-सिखाने की प्रस्तावित प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए स्वयंसेवी शिक्षकों के लिए मार्गदर्शिका का भी निर्माण किया गया है। इन प्रवेशिकाओं के निर्माण का आधार बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान (एफ.एल.एन.) संबंधी सीखने के प्रतिफल (लर्निंग आउटकम्स) हैं जिसमें भाषा में पढ़ने-लिखने की और गणितीय संक्रियाओं को करने की कुशलताओं को सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार 'उल्लास' प्रवेशिका में भाषा एवं गणित एकीकृत रूप से रहते हैं। बुनियादी साक्षरता एवं संख्या-ज्ञान के सीखने के प्रतिफल मुख्य रूप से 13 तरह की अंतर्वस्तु (थीम) में इस प्रकार संजोए गए हैं कि वे एक साथ ही संबोधित होते हैं। उदाहरण के लिए, परिवार और पड़ोस, बातचीत, खान-पान और स्वास्थ्य, यात्रा, आपदा प्रबंधन, कानूनी साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, वित्तीय साक्षरता, साइबर सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण, खरीदारी, बैंक आदि। इन पाठों की विषय-वस्तु को इस तरह से संरचित किया गया है कि शिक्षार्थी इन पाठों के साथ स्वयं को जोड़कर देख सकें अर्थात उसके साथ तादात्म्य स्थापित कर सकें और इन पाठों से उपजा ज्ञान एवं जानकारी उन्हें दैनिक जीवन के कार्य करने में सहायता कर सके। भाषा का शिक्षाशास्त्र यह जानकारी देता है कि प्रत्येक विषय या अनुशासन की अपनी एक विशिष्ट भाषा होती है और इस तरह से गणित की भी भाषा होती है। जब हम भाषा सीखते हैं तो उस भाषा में प्रस्तुत विषय भी सीखते हैं और जब विषय सीखते हैं तो भाषा का भी अर्जन होता है। उदहारण के लिए, डिजिटल साक्षरता के अंतर्गत मीडिया से जुड़े विभिन्न प्रकार के उपकरण हमारे दैनिक जीवन की बातचीत और कार्य में सम्मिलित रहते हैं और उन उपकरणों की अपनी विशिष्ट भाषा भी हम सहज, स्वाभाविक रूप से अर्जित करते हैं। मोबाइल, माउस, कीबोर्ड, यूट्यूब, व्हाट्सऐप, फेसबुक आदि शब्द सहज रूप से हमारे शब्दकोश का हिस्सा बनते चले जाते हैं। उदहारण के लिए पहले, पाठ की थीम 'परिवार और पड़ोस' के अंतर्गत मोबाइल के माध्यम से 1–9 तक की गिनती सिखाने का प्रयास किया है। वहीं 'हमारे आस-पास' पाठ में सुखोमाजरी गाँव की कहानी के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण संबंधी साक्षरता को संबोधित किया गया है।

इसके अतिरिक्त महत्वपूर्ण जीवन कौशलों के संदर्भ में डिजिटल साक्षरता, वित्तीय साक्षरता, कानूनी साक्षरता, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, आपदा प्रबंधन आदि विषयों से संबद्ध तथ्यात्मक जानकारी को छोटी-छोटी पुस्तिकाओं, कहानियों की किताबों और एनिमेटेड फिल्मों में संजोया गया है। यह सामग्री भी कोंकणी, तमिल, खासी, गारो, कन्नड़, सिंधी, संस्कृत, कोकबोरोक आदि 22 भाषाओं से अधिक भाषाओं में प्रिंट एवं ऑडियो कार्यक्रम के रूप में राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ के वेब पृष्ठ और दीक्षा पोर्टल पर उपलब्ध हैं। महत्वपूर्ण जीवन कौशलों पर आधारित रोचक और पाठक केंद्रित सामग्री को निम्न प्रकार से देखा जा सकता है—

कहानियों की किताबों की भाषा सरल एवं पठनीय है तथा चित्रांकन पाठक को पढ़ने के लिए आमंत्रित करता है। कहानियों की किताबों के ऑडियो प्रोग्राम भी निर्मित किए गए, जिससे पाठक अपनी सुविधा के अनुसार सुनकर जानकारी प्राप्त कर सकें।

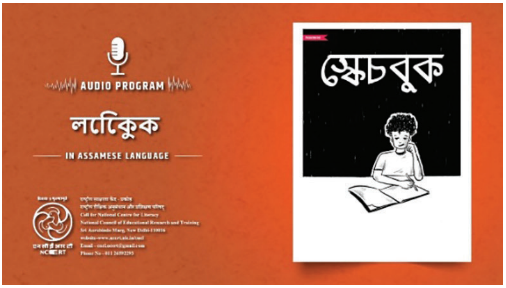

(महत्वपूर्ण जीवन कौशलों पर आधारित भारतीय भाषाओं में ऑडियो कार्यक्रम)

इनके अतिरिक्त महत्वपूर्ण जीवन कौशलों पर आधारित एनिमेटेड फिल्म भी हैं। इन एनिमेटेड फिल्मों के विषय भी असाक्षर/नवसाक्षर शिक्षार्थियों

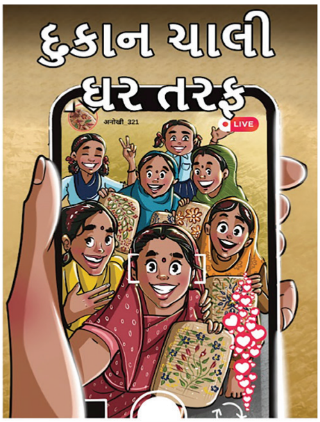

(महत्वपूर्ण जीवन कौशलों पर आधारित भारतीय भाषाओं में कहानियों की किताबें)

के जीवन से गहराई से जुड़े हुए हैं। मोबाइल जैसी सामान्य वस्तु के ध्यानपूर्वक प्रयोग के बारे में अत्यंत रोचकपूर्ण तरीके से चर्चा की गई है। ये एनिमेटेड फिल्में इस प्रकार हैं—

(महत्वपूर्ण जीवन कौशलों पर आधारित
भारतीय भाषाओं में एनिमेटेड फिल्में)

महत्वपूर्ण जीवन कौशलों पर आधारित कहानियों की किताबें ब्रेल लिपि में भी विकसित की गई हैं और इस प्रकार प्रिंट, ऑडियो, वीडियो, ब्रेल आदि में संसाधन सामग्री उपलब्ध कराते हुए समावेशी परिदृश्य तैयार किया गया है। शिक्षार्थी अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार किसी भी रूप की सामग्री का प्रयोग करते हुए महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकें।

महत्वपूर्ण जीवन कौशलों के माध्यम से बुनियादी साक्षरता और संख्या-बोध की निष्पत्ति

'उल्लास' कार्यक्रम के अंतर्गत विकसित संसाधन सामग्री बुनियादी साक्षरता और संख्या-बोध के सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने एवं नवसाक्षारों के लिए पोस्ट लिटरेसी कार्यक्रम हेतु पठन सामग्री उपलब्ध कराती है। यह हम जानते हैं कि असाक्षर शिक्षार्थी भाषा के मौखिक रूप से भली-भाँति परिचित हैं और मौखिक भाषा के सहारे ही वे परस्पर बातचीत करते हैं, विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, अपनी बात को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करते हैं और दूसरे की बात को भी समझते हैं। इसी प्रकार से गणितीय अवधाराणाओं का प्रयोग करते हैं, लेकिन संभवत: नोट पर छपे अंकों की पहचान न कर पाएँ। वे क्या नहीं कर पा रहे हैं? वे किसी भाषा में पढ़ने, लिखने और गणितीय संक्रियाओं को पूर्ण आत्मविश्वास के साथ उपयोग में नहीं ला पा रहे हैं। भाषा का शिक्षाशास्त्र और उससे संबद्ध पद्धतियाँ इस ओर संकेत करते हैं कि पढ़ना-लिखना सीखने के लिए भरपूर मात्रा में मौखिक भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

आइए, जानते हैं कि महत्वपूर्ण जीवन कौशलों पर आधारित विभिन्न प्रकार की सामग्री किस प्रकार से बुनियादी साक्षरता (पढ़ना-लिखना) और संख्या-ज्ञान (गणित) की निष्पत्ति में सहायक है—

दुमका गाँव के मंदिर के अहाते में ही सामाजिक चेतना केंद्र बना हुआ है जहाँ उस गाँव के निवासी निमय, नकुल, मंजु, जिसुन, लखीम, मनोज सोरेन, कोरो सोरेन, मीना मुरमु, बिष्णु, बड़का तुडु आदि

लगभग 20-25 व्यक्ति शाम को पढ़ने आते थे। दिनभर मजदूरी करके शाम को थोड़ा-सा समय अपने पढ़ने-लिखने और सीखने के लिए निकालना बहुत बड़ी बात है। पढ़ाने वाला कौन? उसी गाँव की मीना मुरमु जो स्वयं कक्षा 10 की छात्रा है। उसने यह दायित्व लिया कि वह अपने गाँव के असाक्षर व्यक्तियों को साक्षर बनाएगी। मीना मुरमु स्वयंसेवी शिक्षक है।

प्रारंभिक बातचीत

कोरो सोरेन ने सामाजिक चेतना केंद्र पर आते ही एक सुखद खबर सभी को सुनाई। उसने एक नया मोबाइल खरीदा है। बच्चों के पढ़ने-लिखने के काम तो आएगा ही, साथ ही दिनभर की खबरें भी देख-सुन लेगा। सभी के हाथों में मोबाइल इधर से उधर घूमने लगा। मीना ने कोरो सोरेन से कहा, "चाचा, नए मोबाइल की बधाई"!

"बधाई तुम्हें भी बिटिया! मुझे मोबाइल चलाना सीखा देना। सुना है कि मोबाइल से पैसे का लेन-देन भी होता है, बैंक जाने की जरूरत ही नहीं पड़ती! हैं बिटिया? ये बात सही है क्या?"

"हाँ, चाचाजी! बात एकदम पक्की है।"

"लेकिन भैया, पैसा तो बैंक में जमा होता है। मोबाइल में पैसा कैसे जमा होगा और निकलेगा? यह बात कुछ समझ नहीं आई।" जिसुन ने सिर खुजलाते हुए कहा।

मीना ने घोषणा की, "तो आज की कक्षा मोबाइल से ही शुरू करते हैं। लो, मंजु मामी भी आ गईं।"

"हाँ, हाँ! आज मोबाइल से ही शुरू करते हैं।" सभी ने समवेत स्वर में कहा।

मोबाइल से 'म'

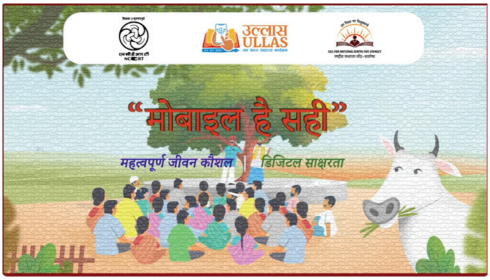

सभी लोग मीना को घेरकर बैठ गए। मीना ने अपने मोबाइल पर एक फिल्म चलाई जिसका नाम था— 'मोबाइल है सही!' "सुनो, सुनो सुनो..." से फ़िल्म शुरू होती है और सब बड़े चाव से फिल्म देख रहे थे और मीना सभी के चेहरों के भाव देख रही थी। एक बार और चलाओ तो बिटिया। सभी की फरमाइश शुरू हो गई। मीना ने दो-तीन बार फिल्म चलाई। जब तक गाँव के लोग संतुष्ट नहीं हो गए। मीना ने मोबाइल

पर बातचीत शुरू कर दी थी— फिल्म कैसी लगी? क्या अच्छा लगा? क्या नई बात पता चली? अपनी निजी तस्वीरों को बहुत संभालकर रखना होगा। अपना बैंक का खाता नंबर, ए.टी.एम. का पिन नंबर किसी को नहीं बताना। बहुत बार ऐसे संदेश आते हैं कि आपका इनाम निकला है तो अपने बैंक की सारी जानकारी दे दीजिए, ताकि इनाम की धनराशि आपके बैंक में जमा हो जाए, आपको लोन दे रहे हैं, जबकि आपने कभी लोन के लिए कोई चिट्ठी लिखी ही नहीं। ये सब धोखाधड़ी है, संभलकर, होशियारी से काम करना होगा! आदि, आदि।

मीना ने बोर्ड पर बड़े-बड़े आकार में लिखा— 'मोबाइल' और पूछा, यह क्या लिखा होगा? बिष्णु ने बहुत सकुचाते हुए कहा— शायद मोबाइल लिखा होगा! मीना ने प्रशंसा की और पूछा, आपको यह कैसे पता चला कि यह मोबाइल लिखा होगा। बिष्णु ने बताया कि कोरो सोरेन ने जिस डिब्बे में से मोबाइल निकालकर दिखाया था, उस डिब्बे पर ऐसा-सा ही कुछ लिखा हुआ था, इसलिए...! मीना ने बिष्णु की चतुराई की फिर से प्रशंसा की। फिर बारी-बारी से सभी ने 'मोबाइल' शब्द पढ़ा। अब मीना ने बोर्ड पर लिखे 'मोबाइल' शब्द कि ओर संकेत करते हुए पूछा कि मोबाइल शब्द में पहली आवाज कौन-सी होगी? तरह–तरह के जवाब आने लगे— **मो, म, मे, मा** आदि। अब मीना ने बोर्ड पर बड़े आकार में लिखा— **'म'** और उसे दोहराया— म— फिर 'म' की आवाज के इर्द-गिर्द चर्चा शुरू हुई—

- किस-किस चीज के नाम में 'म' की-सी आवाज आती है? (आम, मटर, मेला, मिट्टी आदि)
- किसे-किसके नाम में 'म' की-सी आवाज आती है? (मंजु, मीना, निमय, लखीम, मनोज, महेंद्र काका आदि)

मीना ने सभी के द्वारा बोले गए शब्द लिखे और शब्द के नीचे अँगुली रखकर पढ़ा, ताकि ध्वनि-आकृति संबंध बन सके। इसके उपरांत मीना ने सभी को एक-एक पेपर दिया और कहा कि आपको इन बहुत सारे अक्षरों में से 'म' अक्षर को पहचानकर उस पर घेरा लगाना है। उसके बाद उन शब्दों पर घेरा लगाना है जिसमें 'म' किसी भी रूप में आया होगा। सबने एक-दूसरे और मीना की सहायता से यह कार्य भी कर लिया। इसके बाद

'मोबाइल', 'मटर', 'आम',' मेला', 'मंजु', 'मीना,' लिखा और फिर बड़े से आकार में 'म' भी लिखा।

इसके बाद अभ्यास के लिए मीना ने कुछ शब्द कार्ड सभी के सामने रखे और एक-एक करके सभी से उनके नाम पहचानने के लिए कहा—

सभी ने चित्रों के सहारे शब्दों को पहचाना और पढ़ा। चूँकि वे शब्द तो बोल ही रहे हैं, तो मीना ने उन्हें चित्रों के नाम लिखने के लिए कहा। इसके बाद अलग-अलग मात्राओं वाले शब्द लेते हुए 'म' (मटर), 'मा' (टमाटर), 'मो' (मोर) के बोलने में अंतर, पढ़ने-लिखने में अंतर को समझने में मदद की।

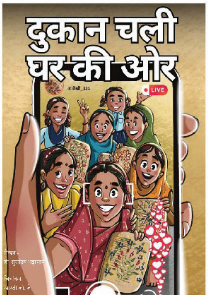

कहानी का पिटारा

मीना ने रोज की तरह अपने झोले में से कहानी की एक किताब निकाली और पढ़ना शुरू करने ही वाली थी कि अचानक से कुछ याद आया! उसने निमय काका से पूछा, "काका, काकी को तो कढ़ाई-बुनाई आती है न"?

"खूब आती है बेटा। तुम्हें कुछ बनवाना है क्या"?

"नहीं, नहीं काका!" और यह कहकर मीना खामोश हो गई। तभी लखीम की आवाज आती है— "क्या, आज कहानी सुनने को नहीं मिलेगी क्या"? मीना की तंद्रा भंग होती है और वह कहानी पढ़ना शुरू करती है। आज की कहानी का नाम था— 'दुकान चली घर की ओर'।

(जेठ की झुलसती दोपहरी। अनोखी अपने घर के आँगन में कुछ फटी-पुरानी बोरियाँ लिए बैठी थी)।

"अनोखी, क्या कर रही हो"?

"अरे विमला! आओ-आओ! घर पर कुछ पुरानी बोरियाँ रखी थीं। सोचा, इनसे चौकी पर बिछाने के लिए आसन ही बना लूँ।"

(विमला ने देखा कि अनोखी बोरियों को सिलकर उनके ऊपर पटुए की घास से बहुत सुंदर कलाकारी कर आसन बना रही थी)।

"अरे वाह! अनोखी, तुम तो सच में अनोखी हो! तुमने इतनी खूबसूरत कढ़ाई करके इन पुरानी बोरियों को बिलकुल नए जैसा कर दिया है।"

"इसमें कौन-सी बड़ी बात है! यह काम तो मैं सालों से कर रही हूँ।"

"अरे तुम नहीं जानती कि दुनिया भर में इस अनोखी कला को कितना पसंद किया जाता है! और

तुम चाहो तो तुम्हारी यह कला तुम्हारी आमदनी का जरिया भी बन सकती है।”

विमला ने एक-एक करके सबकी तस्वीर ली, और उन्हें अपने सोशल मीडिया पर साझा किया। साथ ही यह भी लिखा कि,

मेरी मित्र अनोखी की अनोखी कशीदाकारी! क्या आप भी इनसे अपना घर सजाना चाहेंगे? यदि हाँ, तो हमसे संपर्क करें।

लो भेज दिया! कुछ ही देर में विमला के सोशल मीडिया पर अनोखी के काम की तारीफ होने लगी।...

उसकी सफलता की कहानी आस-पास के गावों तक पहुँचने लगी। बहुत-सी महिलाएँ अब उससे यह सब सीखना चाहती थीं।

अनोखी की यह कोशिश अब सिर्फ उस तक ही सीमित नहीं थी। अब उसके साथ इस सफर में और भी महिलाएँ जुड़ गईं थीं।

आज वह दूसरी महिलाओं को भी अपनी कला और सोशल मीडिया का सही उपयोग करना सिखाती है। अब दुकान तो घर आ ही चुकी है, साथ ही उसका स्कूल भी घर से ही चल रहा है।

कहानी समाप्त होने के बाद निमय काका ने मीना से पूछा, “क्या तुम भी यही सोच रही हो कि तुम्हारी काकी की दुकान घर की ओर चल दे”?

मीना ने हामी भरी और सभी का हौंसला बढ़ाया कि हमारे पास अगर कोई भी हुनर या कला है तो हम भी सोशल मीडिया के जरिए घर बैठे आजीविका का काम करें, जैसे अनोखी ने किया।

हिसाब-किताब

‘दुकान चली घर की ओर’ में संख्या-ज्ञान अथवा गणित कि भी काफी गुंजाइश है और अक्सर वयस्क शिक्षार्थी हिसाब-किताब में काफी बेहतर प्रदर्शन करते हैं, क्योंकि यह उनके जीवन में प्रतिदिन होता या दैनिक जीवन का हिस्सा है। मीना ने कहानी सुनाने के बाद सभी से अंदाजा लगाने के लिए कहा और एक सवाल पूछा— “अगर अनोखी ने एक आसन बुनने में 100 ग्राम धागा लगाया तो 50 आसनों को बुनने में कितने ग्राम धागा लगेगा”?

उत्तर आया— “सरल-सा तरीका है। 100 ग्राम को 50 आसनों से गुणा कर दो तो हुए 5000 ग्राम धागा।

प्रश्न आया— “ 5000 ग्राम धागा कितने किलो धागा हुआ?

उत्तर आया— बहुत सरल है। एक किलो में 1000 ग्राम होते हैं, तो 5000 ग्राम हुए 5 किलो में।

प्रश्न आया— अगर 10 आसनों की कीमत 10 हजार रुपये है, तो एक आसन की कीमत क्या है?

उत्तर आया— और भी सरल है— 1000 रुपये!

हिसाब-किताब की दुनिया में सभी बहुत बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। निमय काका गहरे सोच में थे कि बिना दुकान के दुकान कैसे चलेगी।

दुकान से ‘द’

कहानी में ऐसे अनेक शब्द आए हैं जिनकी पुनरावृत्ति हुई है, जैसे— दुकान, सोशल मीडिया, अनोखी, कला, कढ़ाई, घर आदि। इन्हीं शब्दों को लेते हुए—

साक्षर शिक्षार्थियों को शब्द से अक्षर और फिर शब्द सीखने में सहायता की जा सकती है। शब्द-चित्र कार्ड्स के माध्यम से चित्रों के सहारे शब्द पढ़ने और लिखने के प्रर्याप्त अवसर मिले—

1. दुकान— द – दवाई, दाल, दोना, दस आदि।
2. कला— क – कलम, काका, काकी, केला आदि।
3. अनोखी— अ – अनाज, अदरक, अजगर, अनार आदि।

हिंदी वर्णमाला के अक्षर और मात्राएँ भी साथ ही सिखाई जा सकती हैं, क्योंकि मौखिक भाषा का ज्ञान उनके पास है ही।

परीक्षा की घड़ी

लखीम और बड़का आपस में कुछ धीमे-धीमे बात कर रहे थे। निमय ने जोर से पूछा— "का हुआ रे? का बतिया रहे हो"?

लखीम और बड़का ने एक-दूसरे को देखा और कहा, "मीना के साथ-साथ सबके लिए पहेलियाँ हैं, बूझो तो जानें!"

1. कोई ऐसा शब्द बताओ जिसमें 'म' भी आता हो और 'ल' भी आता हो। (मतलब)
2. कोई ऐसा शब्द बताओ जिसमें 'ब' अक्षर दो बार आता हो। (बबूल)
3. एक आसन बनाया 100 रुपये में और बेच दिया 200 रुपये में तो कितने का लाभ हुआ? (100 रुपये)

जैसा कि 'उल्लास' के दिशानिर्देशों और स्वयं साक्षरता की परिभाषा में भी स्पष्ट किया गया है कि बुनियादी साक्षरता एवं संख्या-ज्ञान को महत्वपूर्ण जीवन कौशलों के माध्यम से प्राप्त किया जाएगा। इस संदर्भ में यह समझना भी आवश्यक है प्रवेशिका (प्राइमर) केवल एक उपकरण हैं, एकमात्र सामग्री नहीं। प्रवेशिका के अतिरिक्त भी अन्य प्रकार की संसाधन सामग्री से पढ़ना-लिखना और गणित सीखना सहज हो सकता है। स्वयंसेवी शिक्षकों की स्वयं की तैयारी और अवधारणात्मक समझ का बेहतर होना जरूरी है। कहानी की किताब हो या कहानी का ऑडियो हो या फिर एनिमेटेड फिल्म – बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान को सीखा जा सकता है। भाषा और गणित के साथ-साथ डिजिटल साक्षरता, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और व्यावसायिक कौशलों की चर्चा भी की जा सकती है।

संदर्भ

जहालदोषालीवा, राखत, सी. तंग, जिंअ, अन्नपूर्णा अय्यपन और बक्सुआ (संपादक). 2022. लेवेरागिग इनोवेटिव टेक्नोलॉजी इन लिटरेसी एंड एजुकेशन प्रोग्राम्स फॉर रीफ्यूजीस माइग्रेट्स एंड इंटरनली डिस्प्लेस्ड पर्संस. युनेस्को इंस्टिट्यूट फॉर लाइफलांग लर्निंग, हैम्बर्ग, जर्मनी.

फ्रेरे, पॉल. 1996. (अनुवादक— रमेश उपाध्याय). *उत्पीड़ितों का शिक्षाशास्त्र*. ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली.

यूनाइटेड नेशंस. 2015. ट्रांसफार्मिंग आवर वर्ल्ड. द *2030 एजेंडा फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट*. यूनाइटेड नेशंस.

यूनेस्को. 2021. *काउंटिंग द कॉस्ट : अचीविंग लिटरेसी इन कंट्रीज ऑफ द ग्लोबल अलाइंस फॉर लिटरेसी*. यूनेस्को इंस्टिट्यूट फार लाइफलॉग लर्निंग, हैम्बर्ग, जर्मनी.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

———. 2022. *गाइडलाइंस ऑफ न्यू इंडिया लिटरेसी प्रोग्राम (अ सेंट्रली स्पांसर्ड स्कीम)*. स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली.

स्मिथ, फ्रैंक. 2004. *अंडरस्टैडिंग रीडिंग साइकोलिंगईस्टीक एनालिसिस ऑफ रीडिंग एंड लर्निंग टू रीड (छठा संस्करण)*. लॉरेंस रलाबॉम एसोसिएट्स पब्लिशर, महवाह, न्यू जर्सी. लंदन.

वेबलिंक्स

https://ncert.nic.in/cncl/animated_videos.php

https://ncert.nic.in/cncl/cls_audio_program.php

https://ncert.nic.in/cncl/index.php

https://ncert.nic.in/cncl/resources/pdf/DO%20Letter%20Regarding%20Definition%20of%20Literacy.pdf

https://ncert.nic.in/cncl/resources/pdf/Draft_Guidelines_of_NILP.pdf

https://ncert.nic.in/cncl/resources/story_books/hindi/dukan_chali_ghr_ki_aur.pdf

https://ncert.nic.in/cncl/story_book.php

https://sdgs.un.org/publications/transforming-our-world-2030-agenda-sustainable-development-17981

https://www.un.org/sustainabledevelopment/news/communications-material/

https://ullas.education.gov.in/nilp/about-us

https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000247444#:~:text=Year%20of%20publication,sa/3.0/%20igo/).